प्रेस विज्ञप्ति

आज दिनांक 22 अक्टूबर, 2016 को चिकित्सा विश्वविद्यालय के कलॉम सेंटर में पत्रकार बंधुओ के लिए बेसिक लाइफ सपोर्ट एवं एडवांस कार्डिएक लाइफ सपोर्ट की कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में विभिन्न समाचार पत्रो और समाचार चैनलो के पत्रकारों ने भाग लिया।

केजीएमूय आईटीसी की कोआर्डिनेटर और बेसिक लाइफ सपोर्ट व एडवांस लाइफ सपोर्ट कार्यशाला की आयोजक प्रो0 रजनी गुप्ता ने बताया की हमारे देश में भारी संख्या में प्रतिवर्ष बहुत से लोग हृदयगति के अचानक थम जाने के कारण मृत्यु को प्राप्त हो जाते है। ऐसी अवस्था में यदि उनके समीप अथवा आस–पास का व्यक्ति उस मरीज को तुरन्त बेसिक लाइफ सपोर्ट प्रदान कर देता है, तो उस मरीज के बचने की संभावना 2 से 3 गुना ज्यादा बढ़ जाती है।

बेसिक लाइफ सपोर्ट (मूल–जीवनरक्षी) का ज्ञान प्रत्येक व्यक्ति को होना अति–आवश्यक है। जिससे कि किसी विषम परिस्थिति में या कॉर्डियक अरेस्ट की स्थिति में उच्च कोटि बेसिक लाइफ सपोर्ट के माध्यम से प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करके व्यक्ति की जान बचाई जा सके।

बेसिक लाइफ सपोर्ट की कार्यशाला में मानव सदृष्य विभिन्न मैनीकिन (मानव समान पुतला) के द्वारा इस विधि का प्रशिक्षण दिया जाता है।

इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य यह है कि इसमे प्रतिभाग लेने वाले व्यक्तियों को इस काबिल बनाया जाए जिससे कि वह किसी अन्य व्यक्ति की किसी दुर्घटना के समय या हृदय गति आचानक रूक जाने अथवा उसकी सॉस रूकने या किसी बाहरी वस्तु के द्वारा गला अवरोधित हो जाने पर उच्च श्रेणी बेसिक लाइफ सपोर्ट के माध्यम से उस व्यक्ति की हृदयगति और श्वांस को बनाये रखने में सहयोग दें और मरीज के जीवन की रक्षा डॉक्टर के पास पहुचने तक करें।

इस कार्यशाला में आटोमेटेड एक्सटर्नल डिफिब्रीलेटर (स्वचालित बाहरी डिफिब्रीलेटर) का प्रयोग के बारे मे भी जानकारी प्रदान की गई। इस उपकरण का प्रयोग करना अति आसान है। इसका प्रयोग प्रत्येक व्यक्ति कर सकता है। हृदयगति के पुनः वापस आने पर विभिन्न तरह की हृदय की धड़कन को नियंत्रण कराना, हार्ट अटैक होने पर प्रारम्भिक चिकित्सा को कैसे प्रदान किया जायेगा और स्ट्रोक का प्रारम्भिक उपचार करना भी सीखाया गया।

डॉ0 रजनी गुप्ता ने यह भी बताया कि जैसे कोई व्यक्ति बेहोश हो जाता है, तो पहला काम है कि

1. सुरक्षा स्वंय और मरीज की।
2. हम उसका रिस्पान्स कंधो को हिला कर चेंक करते है।
3. श्वांस की गति चेक करते है।
4. हम डॉक्टर को एम्बुलेन्स और ए0ई0डी0 के साथ मगॉते है।
5. हृदय की धड़कन देखते है।
6. चेस्ट का दबाव शुरू कर देते है।
7. दो बार मुॅह से एक सेकण्ड की श्वांस देते है।
8. ए0ई0डी0 का प्रयोग करते है और
9. जब तक डॉक्टर मरीज का उपचार प्रारम्भ न करे तब तक मरीज की कार्डिएक मसाज करते हैं। यदि किसी व्यक्ति को यह जानकारी प्राप्त करनी है, तो वह मो0 नं0 8858335504 एवं 9559570959 पर प्राप्त कर सकता है और चिकित्सा विश्वविद्यालय में प्रशिक्षण प्राप्त कर सकता है।

डॉ0 रजीन गुप्ता ने बताया कि केजीएमयू का यह सेण्टर ए0एच0ए0 द्वारा प्रमाणित है तथा कोई भी व्यक्ति यहां सम्पर्क स्थापित करके यह ट्रेनिंग प्राप्त कर सकता है ताकि अचानक हृदयगति रूकने पर ज्यादा से ज्यादा लोगो को बचाया जा सके।

इस अवसर पर चिकित्सा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रवि कांत जी ने कहा कि अभी यह ट्रेनिंग चिकित्सा विश्वविद्यालय के डॉक्टरों, कर्मचारियों और स्टूडेंट को प्रदान की गई है। अब हमारा उद्देश्य है कि यह ट्रेनिंग समाज के सभी लोगो तक पहुचाया जा सके। इसके लिए हमें पुलिस के लोगो, स्कूल के छात्रो, अन्य संस्थाओ में कार्य करने वाले लोगो को इसके बारे मे बताना होगा और उनको यह प्रशिक्षण प्रदान करना होगा। यह प्रशिक्षण क्लास 6 और 7 के छात्रों से शुरू कर देना चाहिए। ताकी समय रहते ज्यादा से ज्यादा लोगो की जान बचाई जा सके।